प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

सच्ची देशभक्ति सरकार की गलत नीतियों को चुनौती देने की इच्छा है...
-रॉन पॉल

अमेरिकी चिकित्सक

सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में सीबीआई और कोलकाता पुलिस कमिश्नर के अधिकार क्षेत्र और कानूनी बाध्यताओं को स्पष्ट कर दिया है, इसके बावजूद केंद्र और राज्य के बीच जारी सियासी टकराव खत्म होता नहीं दिख रहा है।

आखिर कब तक

शारदा

घोटाले की जांच के सिलसिले में सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले से सीबीआई के अधिकार क्षेत्र और कोलकाता पुलिस के कमिश्नर राजीव कुमार की कानूनी बाध्यता को लेकर स्थिति जरूर स्पष्ट हो गई है, लेकिन पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और भाजपा की अगुआई वाली केंद्र सरकार के बीच टकराव कम होता नहीं दिख रहा है। दिलचस्प यह है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश को ममता और केंद्र सरकार दोनों ही अपनी नैतिक जीत बता रहे हैं। वास्तव में देखा जाए तो राजीव कुमार को सीबीआई के समक्ष पेश करने का अदालत का निर्देश अपने पुलिस कमिश्नर के बचाव के लिए धरने पर बैठीं ममता बनर्जी के लिए बड़ा झटका है। हालांकि अदालत ने राजीव कुमार की गिरफ्तारी पर फिलहाल रोक लगाई है और सीबीआई को निर्देश दिए हैं कि वह उनसे तटस्थ जगह शिलांग में पूछताछ करे। यह आदेश ही केंद्र और राज्य के बीच बढ़ती दूरी को रेखांकित करने के लिए काफी है। मुख्यमंत्री होने के नाते ममता बनर्जी को लाखों लोगों के हितों से जुड़े इस मामले को उसकी निर्णायक परिणति तक पहुंचाने में मददगार होना चाहिए, लेकिन वह इसे राजनीतिक रंग दे रही हैं। इसी तरह केंद्र सरकार के अधीन काम करने वाली सीबीआई की मंशा पर सवाल उठाए जा सकते हैं कि आखिर पांच साल पुराने मामले में उसने अचानक यह तेजी क्यों दिखाई! लोकसभा चुनाव से महज दो महीने पहले शुरू हुए इस घटनाक्रम ने सत्तारूढ़ भाजपा और विपक्ष के लिए पश्चिम बंगाल को टकराव का मंच बना दिया है। दरअसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की योजना में पश्चिम बंगाल इस बार खास मायने रखता है, जहां 42 सीटें हैं और हाल के दिनों में भाजपा ने यहां अपना जनाधार भी बढ़ाया है। दूसरी ओर ममता बनर्जी ने थोड़े दिनों पहले ही विपक्षी दलों की बड़ी रैली कर ताकत दिखाई थी, जिसमें 23 दल शामिल हुए थे। ऐसा पहली बार नहीं है कि भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों की कानूनी लड़ाई राजनीतिक ढंग से लड़ी जा रही हो, लेकिन भाजपा के शीर्ष नेताओं की रैलियों में बाधा पहुंचाकर तृणमूल सरकार ने लोकतांत्रिक मूल्यों को कोई कम नुकसान नहीं पहुंचाया है। चूंकि इस मामले से जुड़ी सुनवाई अदालत में अभी चलेगी, जिसमें सीबीआई और पश्चिम बंगाल सरकार के बीच शह और मात का खेल चलेगा और सियासी तमाशा भी।

बदलता बांग्लादेश और हसीना की चुनौतियां

बांग्लादेश में नई सरकार के गठन के लगभग एक महीना हो चुका है और हसीना सरकार देश को राजनीतिक स्थिरता प्रदान करने और तेज आर्थिक विकास की राह पर चल पड़ी है।

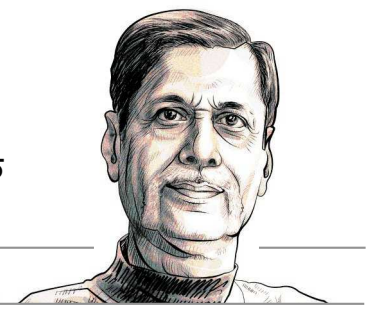

महेंद्र वेद, वरिष्ठ पत्रकार

बांग्लादेश के संसदीय चुनाव में भारी बहुमत से जीत ने शेख हसीना को आत्मविश्वास के साथ काम करने का अवसर दिया है। उनके गठबंधन ने 299 में से 288 सीटें जीतीं और अब उनके सामने कोई विपक्ष नहीं बचा है। नई सरकार गठन के अब लगभग एक महीना हो चुका है और वह देश को राजनीतिक स्थिरता प्रदान करने और तेज आर्थिक विकास की राह पर चल पड़ी हैं।

जैसा कि चुनाव से एक दिन पूर्व भारतीय पत्रकारों के एक समूह के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा था कि अगर एक बार फिर से वह चुनाव जीत जाती हैं, तो 2021 में वह राष्ट्र की 50वीं वर्षगांठ का नेतृत्व करेंगी। उनकी यह इच्छा तो पूरी हुई, पर उनके सामने कुछ बड़ी चुनौतियां भी हैं। उन्हें राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से समावेशी विकास के लिए प्रयत्न करना चाहिए। खास तौर से उन्हें अर्थव्यवस्था का इस तरह से विकास करना होगा, जो बढ़ती असमानताओं को कम करे।

उनके नेतृत्व में अब बांग्लादेश पीढ़ीगत बदलाव के लिए भी तैयार है, जिसका पहला संकेत उन्होंने मंत्रिमंडल गठन के समय दिया। उन्होंने पुराने सलाहकारों को बेशक बनाए रखा है, पर मंत्रिमंडल में उन वरिष्ठों को जगह नहीं मिली है, जिनमें से कई उनके दिवंगत पिता शेख मुजीबुर्रहमान के साथ काम कर चुके थे। इसके बजाय उन्होंने मंत्रिमंडल में युवा चेहरों को ज्यादा जगह दी है। यह जरूरी भी था, क्योंकि उन्हें मुक्ति के बाद की पीढ़ियों की आकांक्षाओं को पूरा करना है। बांग्लादेश के युवा भी अन्य देशों के युवाओं की तरह महात्वाकांक्षी हैं और वे दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहते हैं। इसलिए इन्होंने देश को एक युवा मंत्रिमंडल दिया है, जो जोश और आत्मविश्वास के साथ नई पीढ़ी की आकांक्षाओं को पूरा करेगी।

जमीनी हकीकत यह है कि आर्थिक विकास में निरंतर तेजी और भारत सहित अन्य दक्षिण एशियाई देशों से सामाजिक विकास सूचकांकों में आगे रहने के कारण वहां हर कोई हसीना से खुश प्रतीत होता है या सापेक्ष राजनीतिक स्थिरता के प्रति सहमत है। अपनी तमाम खामियों के साथ इसमें हसीना के दस वर्षों के शासन का काफी योगदान है।

बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था में वहां के गारमेंट उद्योग का बड़ा हाथ है, जिसमें 70 फीसदी से ज्यादा महिलाएं काम करती हैं। स्वयं महिला होने के नाते हसीना ने महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में भी काफी काम किया है। गारमेंट उद्योग से बांग्लादेश को सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा हासिल होती है। अगर वह आंतरिक विरोधाभासों को ठीक से प्रबंधित कर पाती हैं और उम्मीद करें कि यदि उन्हें बाढ़ या चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निपटना नहीं पड़े, तो लगता है कि बांग्लादेश तेज आर्थिक विकास और बेहतर सामाजिक वातावरण के लिए तैयार है।

हालांकि एक खतरे की आशंका है। चुनावी हार और राज्य द्वारा जारी अभियोजन के चलते इस्लाम से बेहद प्रभावित युवाओं का एक वर्ग ज्ञात विदेशी संपर्क और धन के बल पर कट्टरपंथी बन सकता है। इसलिए हसीना सरकार को धार्मिकता और धर्म के बीच एक रेखा खींचने की जरूरत है, जिसका इस्तेमाल समाज को अस्थिर करने और भविष्य में परेशानियां पैदा करने के लिए किया जा रहा है। ऐसा करने के लिए नई सरकार को सेना, पुलिस और अर्ध सैनिक बलों को खुली छूट देने के खिलाफ बेहतर निगरानी रखनी होगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे संविधानेतर प्राधिकरण न बनें। बांग्लादेश में 15 वर्षों तक सेना या सैन्य-निर्देशित शासन रहा है और एक नाजुक असैन्य नेतृत्व की सेना पर निर्भरता देश में फिर से सेना के लिए दरवाजे खोल सकती है। खुद हसीना सरकार को भी संविधानेतर शक्ति बनने से परहेज करना चाहिए।

इस चुनाव पर भारत के लोगों की काफी नजर थी और इसके नतीजे को लेकर गहरी दिलचस्पी थी। इसकी मुख्य वजह यह है कि इस चुनाव के नतीजे का स्पष्ट असर भारत के पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र की आंतरिक सुरक्षा पर असर पड़ने वाला है। इसके अलावा बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना भारत समर्थक मानी जाती हैं और उनका रुख हमेशा भारत के प्रति सकारात्मक रहा है। इस चुनाव का एक महत्वपूर्ण पहलू था कि पहली बार भारत चुनावी बहस का हिस्सा नहीं बना। पिछले के चुनावों में भारत को या तो खलनायक दिखाया जाता था या सहयोगी के रूप में वर्णित किया जाता था। भारत विरोधी राजनेता बांग्लादेश के लोगों को भारतीय आधिपत्य के खिलाफ चेताते थे। पिछले चुनाव में शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग को 'भारत का दलाल' कहा गया था। ऐसी बातें इस बार के चुनाव में नहीं हुईं।

हसीना ने हमेशा अपने देश की आजादी की लड़ाई में भारत की सहायता को स्वीकार किया है और पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों को बांग्लादेश की धरती का इस्तेमाल करने से रोकने के लिए उनके शिविरों को दृढ़ता से खत्म किया है। हम भी अपने इस पड़ोसी देश को ऊर्जा और व्यापार के क्षेत्र में लगातार मदद कर रहे हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि मौजूदा समय भारत-बांग्लादेश रिश्ते के लिए स्वर्ण काल की तरह है। खालिदा जिया के शासन काल में (वर्ष 2001-06 के दौरान) भारत को काफी कुछ सहना पड़ा था, जबकि शेख हसीना का शासन भारत के अनुकूल है। भारत के अलावा हसीना ने चीन से भी अच्छे संबंध विकसित किए हैं, जिस पर मुझे नहीं लगता कि भारत को तब तक कोई एतराज होना चाहिए, जब तक उसका कोई कदम भारत के खिलाफ न जाए।

कम से कम चुनाव में इस्लामवादियों को पराजित कर हसीना एक अस्थिर राष्ट्र को राजनीतिक स्थिरता प्रदान कर सकती हैं। हालांकि ऐसा कोई नहीं है, जिसे पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष कहा जा सकता है और हसीना खुद धार्मिक रूढ़िवाद के एक हिस्से से जुड़ी हैं और इस्लाम को वहां के राष्ट्र धर्म के रूप में बनाए रखा है, फिर भी उम्मीद की जा सकती है कि बांग्लादेश एक उदारवादी इस्लामी राष्ट्र बना रहेगा। जब दुनिया के कई हिस्से में चरमपंथ और आतंकवाद से मुकाबला जारी है, तब यह पर्याप्त है।

अंतर्ध्वनि

>> पिको अय्यर

घर की अवधारणा रूह से ज्यादा जुड़ी होती है

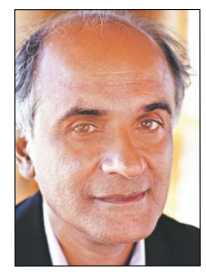

***मुझसे** लोग अक्सर पूछते हैं, आप किस देश के वासी हैं और उन्हें उम्मीद रहती है कि मैं भारत का नाम लूं। अपनी जगह पर वे बिल्कुल सही हैं, क्योंकि मेरा रक्त और विरासत, दोनों भारत से शत-प्रतिशत जुड़े हुए हैं। बावजूद इसके कि मैं एक दिन के लिए भी भारत में नहीं रहा। मैं इसकी हजारों भाषाओं और बोलियों में से किसी का भी एक शब्द बोल नहीं सकता, इसलिए मुझे लगता है कि मुझे खुद को भारतीय कहने का कोई अधिकार नहीं है। मैं जब हांगकांग या सिडनी या वैंकुवर जाता हूं, तो देखता हूं कि ज्यादातर बच्चे मेरे मुकाबले ज्यादा अंतरराष्ट्रीय और बहुसांस्कृतिक हैं। उनका पूरा जीवन भिन्न-भिन्न जगहों में बिताए कालखंडों को जोड़कर निर्मित होता है। उनके लिए घर कोई ठहरी हुई जड़ चीज नहीं होती, बल्कि निरंतर निर्मित होती हुई एक कलाकृति है। हममें से अधिकांश लोगों के लिए घर की अवधारणा मिट्टी की तुलना में रूह से ज्यादा जुड़ी होती है। मुझसे कोई अचानक यह पूछ ले कि आपका घर कहां है, तो मेरा मन फौरन मेरी प्रियतमा या अंतरंग मित्रों या उन गीतों की तरफ ताकने लगेगा, जिन्हें साथ लिए-लिए मैं दुनिया भर में घूमता रहता हूं। मेरा घर सिर्फ भाव रूप में मेरे अंदर बसा हुआ है। अनेक स्तरों पर मुझे लगता है कि यह मुक्ति की चरम सीमा है। जब मेरे दादा-दादी जन्में होंगे, तो उनमें निश्चय ही घर का भाव प्रबल रहा होगा, समुदाय का भाव भी। यहां तक कि जन्म के साथ विरासत की तरह उन्हें शत्रुता का भाव भी ज़रूर मिला होगा और उनसे बाहर निकल पाने की कोई सूरत शायद ही उन्हें सूझी होगी। विदेशियों से घिरे रहने की खूबसूरती यह है कि आप निरंतर सजग बने रहते हैं। यात्राएं मेरे लिए प्रेम करने जैसी होती हैं, क्योंकि अचानक आपकी सभी अनुभूतियों को सक्रिय हो जाना पड़ता है।*

-ब्रिटिश में जन्मे अमेरिकी निबंधकार

मंजिलें और भी हैं

>> वाजेद खान बिदकर

घटिया हेलमेट के खिलाफ सड़क पर अनूठी लड़ाई

मोटरसाइकिल या स्कूटर चलाते वक्त हमें हेलमेट इसलिए प्रयोग करना चाहिए, ताकि किसी भी अनहोनी के वक्त हम सलामत रहें। लेकिन अक्सर यह देखा जाता है कि दुर्घटना की आशंका या अपनी हिफाजत के लिए नहीं, बल्कि पुलिस व आर्थिक दंड से बचने के लिए लोग हेलमेट प्रयोग करते हैं। कुछेक तो घर से हेलमेट लेकर निकलते हैं, लेकिन उनके सिर पर वह तभी आता है, जब उन्हें लगता है कि अगले नुक्कड़ पर पुलिस वाले मिल जाएंगे। यातायात नियमों के प्रति यह लापरवाही मुझे सालती है। मैं अक्सर यही सोचता हूं कि आखिर ऐसा कब होगा कि लोग पुलिस से बचने के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनमोल जिंदगी की सुरक्षा की खातिर हेलमेट इस्तेमाल करेंगे। लोगों की इसी मानसिकता का परिणाम है कि फुटपाथ पर घटिया किस्म के हेलमेट बेचने वालों का गोरखधंधा भी फल-फूल रहा है। लोग कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए सौ-दो सौ रुपये में बिकने वाले मानकविहीन हेलमेट खरीद लेते हैं। जिससे वे यातायात नियमों के दायरे में तो आ जाते हैं, पर हेलमेट प्रयोग करने का उद्देश्य कहीं से भी नहीं पूरा होता। अपने अब तक के जीवन में मैंने न जाने ऐसी कितनी सड़क दुर्घटनाओं के बारे में सुना है, जिसमें बाइक सवार की जान हेलमेट पहनने के बावजूद नहीं बची। कारण वही कि उन्होंने हेलमेट के नाम पर घटिया प्लास्टिक का ढांचा पहना हुआ था। जिससे उनकी जान बचने के बजाय उल्टे मुसीबत में पड़ गई।

हेलमेट की जगह मैं सिर पर बर्तन रखकर बाइक चलाता हूं, ताकि लोग अच्छे हेलमेट प्रयोग के प्रति जागरूक हों।

मैं पुणे में रहने वाला एक क्रिमिनल लॉयर हूं। लेकिन फिलहाल मेरी वकालत अदालतों से ज्यादा सड़क पर जारी है। मैं एक अनूठे तरीके से पुलिस व लोगों का ध्यान मानकीकृत हेलमेट प्रयोग की ओर खींचने की कोशिश कर रहा हूं। दरअसल मैं रोज अपनी बाइक से चलते वक्त अपने सिर पर हेलमेट के रूप में स्टील के बर्तन का इस्तेमाल करता हूं। मैं चाहता हूं कि मुझे देखकर लोगों और पुलिस वालों का ध्यान सिर्फ हेलमेट की जरूरत पर न जाए, बल्कि वे इसकी गुणवत्ता पर भी ध्यान दें।

मुझे हैरत तब हुई, जब मेरे अजीबो-गरीब हेलमेट के बावजूद पुलिस ने मुझे कहीं नहीं रोका। इससे समझ में आता है कि व्यवस्था और नियमों में किस हद तक सुधार की गुंजाइश है। लेकिन मैं मानता हूं कि यदि हेलमेट के मानकों को लेकर कोई सख्त नियम थोप भी दिया जाए, तो भी लोग बाज नहीं आएंगे। बाजार में पहले से मानकीकृत हेलमेट मौजूद हैं, लेकिन ज्यादा कीमत होने से लोग उन्हें नहीं खरीदते। कीमत की शिकायत एक तरह से वाजिब भी है। समाधान यही हो सकता कि सरकार को अच्छे हेलमेट के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ योजनाएं चलानी चाहिए। जब राष्ट्रहित में बिजली बचाने हेतु सरकार एलईडी बल्बों के लिए सब्सिडी दे सकती है, तो लोगों का जीवन बचाना कहां से कमतर उद्देश्य है। क्या यह राष्ट्रहित नहीं है?

मैंने कई दफे यातायात पुलिस के दफ्तर से संपर्क करके अपनी बात पहुंचाई है, लेकिन नतीजा कुछ खास निकला नहीं। हां, बस इतना बताया गया कि यातायात की नियम पुस्तिका में हेलमेट की गुणवत्ता की बात कही गई है। और लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे आईएसआई मार्का हेलमेट का ही प्रयोग करें। लेकिन हकीकत नियम पुस्तिका के इन ब्यौरों से बाहर है। मेरा प्रयास है कि लोग अच्छे हेलमेट की जरूरत समझें।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

तट पर कराहते 'चमत्कारी' कछुए

पर्यावरणविदों की लाख कोशिशों के बावजूद हर साल हजारों कछुओं की मौत हो रही है। जबकि कछुए जल-पारिस्थितिकी के संतुलन में अहम भूमिका निभाते हैं, वैसे भी ओलिव रिडले कछुए कुदरत की शानदार नियामत हैं।

पंकज चतुर्वेदी

बीते एक सप्ताह के दौरान गरियामाथा, ओडिशा के संरक्षित समुद्री तट पर 600 से ज्यादा ओलिव रिडले कछुओं और दो डॉल्फिन के कंकाल बिखरे मिले हैं। हुकीटोला से इकाकूल के बीच ये कंकाल वन विभाग को मिले हैं और सरकारी दावा है कि इन दुर्लभ जल-जीवों की मौत का कारण मछली पकड़ने वाले ट्राले या बड़े जाल हैं। इस पूरे इलाके के 20 किलोमीटर क्षेत्र में मछली पकड़ने पर पूरी तरह पाबंदी है, क्योंकि हर साल नवंबर-दिसंबर से लेकर अप्रैल-मई तक ओडिशा के समुद्र तट एक ऐसी घटना के साक्षी होते हैं, जिसके रहस्य को सुलझाने के लिए दुनिया भर के पर्यावरणविद और पशु प्रेमी बेचैन हैं। हजारों किलोमीटर की समुद्री यात्रा कर ओलिव रिडले नस्ल के लाखों कछुए यहां अंडे देने आते हैं। इन अंडों से निकले कछुए के बच्चे समुद्री मार्ग से फिर हजारों किलोमीटर दूर जाते हैं। यही नहीं, ये शिशु कछुए लगभग 30 साल बाद जब प्रजनन के योग्य होते हैं, तो ठीक उसी जगह पर अंडे देने आते हैं, जहां उनका जन्म हुआ था। ये कुछए विश्व की दुर्लभ प्रजाति ओलिव रिडले के हैं। पर्यावरणविदों की लाख कोशिशों के बावजूद अवैध मछली-ट्रालरों और शिकारियों के कारण हर साल हजारों कछुओं की मौत हो रही है।

यह आश्चर्य ही है कि ओलिव रिडले कछुए हजारों किलोमीटर की समुद्र यात्रा के दौरान भारत में ही गोवा, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश के समुद्री तटों से गुजरते हैं, लेकिन अपनी वंश-वृद्धि के लिए वे अपने घरौंदे बनाने के लिए ओडिशा के समुद्र तटों की रेत को ही चुनते हैं। दुनिया भर में ओलिव रिडले कछुए के घरौंदे महज छह स्थानों पर ही पाए जाते हैं और इनमें से तीन स्थान ओडिशा में हैं। ये कोस्टारिका में दो व मेक्सिको में एक स्थान पर प्रजनन करते हैं। ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले का गरियामाथा समुद्री तट दुनिया का सबसे बड़ा प्रजनन-आशियाना है। इसके अलावा रूसिक्लया और देवी नदी के समुद्र में मिलनस्थल इन कछुओं के दो अन्य प्रिय स्थल हैं।

इस साल ओडिशा के तट पर कछुए के घरौंदों की संख्या शायद अभी तक की सबसे बड़ी संख्या है। अनुमान है कि लगभग सात लाख घरौंदे बन चुके हैं। यह भी आश्चर्य की बात है कि वर्ष 1999 में राज्य में आए सुपर साइक्लोन व वर्ष 2006 के सुनामी के बावजूद कछुओं का ठीक इसी स्थान पर आना अनवरत जारी है। वैसे वर्ष 1996,1997, 2000 और 2008 में बहुत कम कछुए आए थे। ऐसा क्यों हुआ? यह अब भी रहस्य बना हुआ है। 'ऑपरेशन कच्छप' चला कर इन कछुओं को बचाने के लिए जागरूकता फैलाने वाले संगठन वाइल्डलाइफ सोसायटी आफ ओडिशा के मुताबिक, यहां आने वाले कछुओं में से मात्र 57 प्रतिशत ही घरौंदे बनाते हैं, शेष कछुए वैसे ही पानी में लौट जाते हैं।

आठ साल पहले ओडिशा हाई कोर्ट ने आदेश दिया था कि कछुओं के आगमन के रास्ते में संचालित होने वाले ट्रालरों में टेड यानी टर्टल एक्सक्लूजन डिवाइस लगाई जाए। ओडिशा में तो इस आदेश का थोड़ा-बहुत पालन हुआ भी, लेकिन राज्य के बाहर इसकी परवाह किसी को नहीं हैं। 'फैंगशुई' के बढ़ते प्रचलन ने भी कछुओं की शामत बुला दी है। इसे शुभ मान कर घर में पालने वाले लोगों की मांग बढ़ रही है और इस फिराक में भी इनके बच्चे पकड़े जा रहे हैं। कछुए जल-पारिस्थितिकी के संतुलन में अहम भूमिका निभाते हैं, वैसे भी ओलिव रिडले कछुए प्रकृति की चमत्कारी नियामत हैं। अभी उनका रहस्य अनसुलझा है। मानवीय लापरवाही से यदि इस प्रजाति पर संकट आ गया, तो प्रकृति पर किस तरह की विपदा आएगी? इसका किसी को अंदाजा नहीं है।

खुली खिड़की

देशी-विदेशी का अंतर

पश्चिम एशियाई मुल्कों की आबादी में बड़ा हिस्सा उन लोगों का है, जो उन देशों के बजाय विदेश में जन्मे हैं। संयुक्त अरब अमीरात की कुल आबादी में मात्र बारह फीसदी लोग ही ऐसे हैं, जिनका जन्म यूएई में हुआ है। इन देशों में भारतीयों की अच्छी-खासी तादाद है।

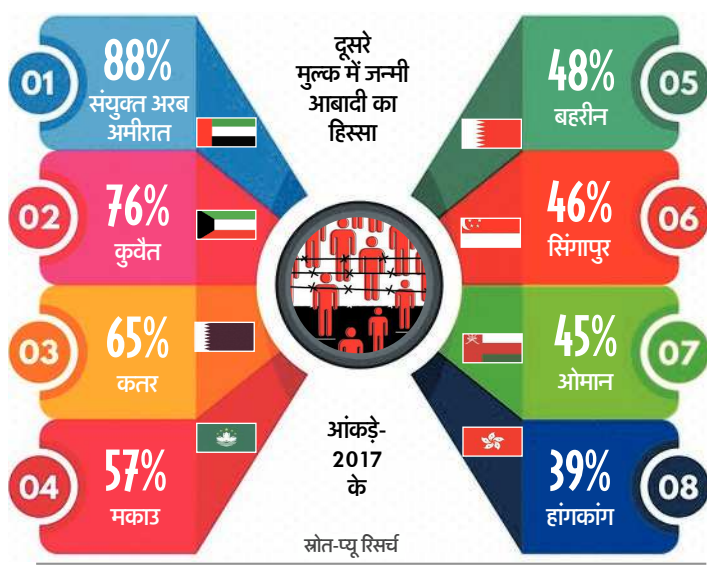

लोटे की चमक

सत्संग

श्री रामकृष्ण परमहंस रोज अपना लोटा बहुत लगन से राख या मिट्टी से मांजकर खूब चमकाते थे। रोज के इस परिश्रम से श्री परमहंस का लोटा खूब चमकता था। उनके एक शिष्य को श्री रामकृष्ण द्वारा प्रतिदिन बहुत मेहनत से लोटा चमकाना बड़ा विचित्र लगता था। एक दिन वह श्री रामकृष्ण जी से पूछ ही बैठा, महाराज! आपका लोटा तो वैसे ही खूब चमकता है। इतना चमकता है कि इसमें हम अपनी तस्वीर भी देख लें। फिर भी रोज-रोज आप इसे मिट्टी, राख और जूने से मांजने में इतनी मेहनत क्यों करते है?

गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस मुस्करा उठे और हंसकर बोले, बेटा! इस लोटे की चमक एक दिन की, एक बार की मेहनत से नहीं आई है; इसमें आई मैल को हटाने के लिए नित्य-प्रति मेहनत करनी ही पड़ती है। ठीक वैसे ही जैसे जीवन में आई बुराइयों, बुरे संस्कारों को दूर करने के लिए हमें रोजाना ही संकल्पपूर्ण परिश्रम करना पड़ता है। वास्तव में स्वयं को अच्छे व्यक्ति में बदलने के लिए हमें रोज के अभ्यास से दुर्गुणों का मैल दूर करना पड़ता है। लोटा हो या व्यक्ति का जीवन, उसे बुराइयों के मैल से बचाने के लिए हमें रोजाना ही कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। तभी इस लोटे या इंसान की चमक बची रह सकती है। प्रत्येक व्यक्ति को इसी प्रकार नित्य अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

महंगी गाड़ी और खुद्दार लड़का

एक गरीब और खुद्दार लड़के की कहानी, जिसने राम को अपनी सोच बदलने पर मजबूर किया।

***राम** के बड़े भाई ने एक बार उसे एक महंगी गाड़ी तोहफे में दी। एक दिन बाहर निकलने पर राम ने देखा कि चौदह-पंद्रह साल का एक गरीब लड़का गाड़ी के अंदर झांक रहा था। राम को आते देखकर वह पीछे हट गया। फिर धीरे से उसने राम से पूछा, अंकल, क्या यह गाड़ी आपकी है? राम बोला, हां, मेरे भाई ने यह कार मुझे तोहफे में दी है। लड़का हैरान होकर बोला, अच्छा! राम सोचने लगा कि अब यह बोलेगा, काश, मेरे पास भी ऐसा ही भाई होता। लेकिन इसके बजाय वह लड़का बोला, काश, मैं भी एक दिन ऐसा भाई बन पाऊं। राम उसकी बातों से प्रभावित हुआ। उसने लड़के से कहा, चलो, तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ दूं। दोनों गाड़ी में बैठ गए। जब गाड़ी आगे बढ़ी, तो लड़के ने उससे कहा, क्या आप मेरे घर के सामने कुछ देर रुक सकते हैं? राम ने मुंह बनाते हुए सोचा, मैंने जरा-सा उससे पूछ क्या लिया, अब यह मुझ पर ही सवारी करेगा। राम कुछ जवाब देता, इससे पहले ही वह लड़का बोल पड़ा, बस वह जो सीढ़ी दिख रही है न, वहीं पर रोक देना। मैं बस दो मिनट में आया। कुछ ही पल बाद राम ने देखा कि वह लड़का वापस चला आ रहा है, लेकिन बहुत धीरे-धीरे संभलकर उतरते हुए। राम ने देखा कि उसने अपनी गोद में एक और लड़के को उठा रखा है, जिसके दोनों पैर नहीं हैं।*

अंतिम सीढ़ी पर अपने भाई को बिठाकर वह लड़का बोला, देखा, जैसी मैंने तुम्हें ऊपर बताई थी, ठीक वैसी ही है न। अंकल के बड़े भाई ने उन्हें यह गाड़ी तोहफे में दी है। एक दिन मैं भी तुम्हें ऐसी ही गाड़ी तोहफे में दूंगा और तुम उसमें सैर करना। राम को अपनी गलती का एहसास हुआ। गाड़ी से उतरकर राम दोनों लड़कों से बोला, क्यों न हम आज ही सैर पर चलें?

बिना सोचे-समझे दूसरों के बारे में धारणा बनाना अहंकार का सूचक है।